PHILOSOPHY

B.A. (Hons), Paper III (Part II)

Moral and Non-Moral action

नैतिक और नीति-शून्य कर्म

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

→ 'नैतिक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है। साधारणतः नैतिक दृष्टि से जो अच्छा है, उसे नैतिक कहा जाता है तथा इसके विपरीत अनैतिक (Immoral)। किन्तु, आचारशास्त्र में 'नैतिक' शब्द का अर्थ भिन्न है। यहाँ, वैसी क्रियाओं जिसका नैतिक निर्णय हो सके वैसे कर्म को 'नैतिक' कहेंगे तथा जिन क्रियाओं का नैतिक निर्णय न हो सके उसे नीति-शून्य (Non-moral) क्रिया कहते हैं।

→ नीतिशास्त्र आचरण का विज्ञान (Science of Conduct) है। यदि आचरण नैतिकता की पूर्वमान्यताओं के परिधि में है तो वैसा आचरण नैतिक (Moral) कहा जाता है जबकि वैसा आचरण जो नैतिकता की पूर्वमान्यताओं की परिधि के बाहर है, वैसा आचरण नीति-शून्य (Non-moral) कहा जाता है।

→ पुनः वैसा आचरण जो नैतिक (Moral) है वह उचित या अनुचित दोनों हो सकता है। साधारणतः जिसे हम अनैतिक (Immoral) आचरण (या कर्म) कहते हैं वह भी नैतिक कर्म (Moral action) ही है क्योंकि नैतिक निर्णय करने के उपरांत ही उसे ~~अनैतिक कर्म~~ नैतिक अथवा अनैतिक कहा जाता है।

इस प्रकार,

~~आचरण (Action) (नैतिकता की पूर्वमान्यताओं के अनुरूप)~~

कर्म या आचरण (Action)

- Moral action (नैतिकता की पूर्वमान्यताओं के अनुरूप) (नैतिक कर्म)
  - नैतिक (Moral)
  - अनैतिक (Immoral)
- Non-Moral action (अनैतिक कर्म)

Scanned with CamScanner

→ इस प्रकार वैसा कर्म जो नैतिकता की पूर्वमान्यताओं की परिधि में है उसे नैतिक-कर्म (moral action) कहा जाता है जबकि नैतिकता की ~~परिधि~~ पूर्वमान्यताओं के परिधि के बाहर के कर्मों को नीतिशून्य-कर्म (Non-moral action)।

→ नैतिक कर्म (moral action) यदि नैतिकता के मापदण्ड के अनुरूप है तो उसे ~~नैतिक~~ उचित, शुभ, अच्छा आदि नैतिक पद से अभिहित कर नैतिक निर्णय दिया जाता है जबकि नैतिकता के मापदण्ड के विपरीत नैतिक कर्म को अनुचित, अशुभ, बुरा आदि नैतिक पद से अभिहित कर नैतिक निर्णय दिया जाता है।

→ उदाहरणार्थ – पशु-पक्षी, ~~बच्चा~~ अबोध बालक, पागल आदि का कर्म नैतिकता की पूर्वमान्यता (व्यक्ति, विवेक और इच्छा-स्वातंत्र्य) में से किसी एक या तीनों पूर्वमान्यताओं के परिधि के बाहर का कर्म है अतः ऐसे कर्म नैतिक (moral) कर्म नहीं है बल्कि ~~नीतिशून्य~~ नीतिशून्य (Non-moral) कर्म है।

इसके विपरीत किसी विवेकशील मनुष्य द्वारा ~~स्वतंत्र~~ स्वतंत्र-इच्छा (freedom of will) से किया गया कर्म नैतिक कर्म (moral action) है। ऐसा कर्म ही नैतिकता का प्रतिपाद्य विषय है क्योंकि ऐसे कर्मों पर ही नैतिकता के मापदण्ड के आधार पर हम नैतिक निर्णय दे पाते हैं ~~के~~ अर्थात् उन कर्मों को अच्छा-बुरा, शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित आदि नैतिकपदों के माध्यम से नैतिक निर्णय दे पाते हैं।

Scanned with CamScanner